5

फारसी सभ्यता : राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

[PERSIAN CIVILIZATION : POLITICAL, SOCIAL AND ECONOMIC CONDITION]

परिचय (Introduction)

रोमन साम्राज्य के साथ ही मध्य एशिया में ईरानी साम्राज्य की भी महत्वपूर्ण स्थिति थी। रोम एवं ईरानी साम्राज्य को दजला नदी (Euphrates River) घाटी एक दूसरे से पृथक् करती थी। भूमध्य सागर के आस-पास रोमन साम्राज्य का वर्चस्व था एवं कैस्पियन सागर के दक्षिण में ईरानी साम्राज्य अवस्थित था। ईरानी साम्राज्य के विस्तार एवं उसकी सभ्यता पर चर्चा किये बिना रोमन साम्राज्य एवं मैसोपोटामिया की सभ्यता का अध्ययन अधूरा ही रहेगा। वर्तमान में विश्व के लिये ईरान का महत्व भले ही पेट्रोल के कारण हो मगर प्राचीन काल में ईरान का इतिहास वीरता से ओत-प्रोत एक गौरवशाली इतिहास था। सिन्धु नदी की घाटी से लेकर दजला नदी की घाटी तक का प्रदेश ईरान का पठार कहलाता है। ईरान के पठार के पश्चिम में ईरान, उत्तर पूर्व में अफगानिस्तान एवं दक्षिण-पूर्व में बलूचिस्तान स्थित हैं। ईरान के मध्यवर्ती पठार में दो विशाल रेगिस्तान है—उत्तर में नमक का रेगिस्तान एवं दक्षिण में लूट का रेगिस्तान। सूसा यहाँ का सर्व प्रसिद्ध नगर था जहाँ के निवासियो ने अति प्राचीन काल में एक सम्पन्न सभ्यता का निर्माण किया। यह सभ्यता सांस्कृतिक दृष्टि से सुमेर से सम्बद्ध थी।

ईरान के निवासी (Resident of Iran)—फ्रेंच पुरातत्ववेत्ता जर्दामन ने सूसा की खुदाई से निष्कर्ष निकाला कि ईरान में भी प्रागैतिहासिक काल में वही कार्ष्णेय लोग बसे हुए थे जो सुमेर, मिस्र, मोहनजोदड़ो एवं भूमध्यसागर के तटीय प्रदेशों में बसे हुये थे।[1] अत: कार्ष्णेय उपजाति को ही यहाँ का मूल निवासी माना जा सकता है परन्तु कार्ष्णेय लोगों की सभ्यता अज्ञात कारणों से नष्ट हो गयी। बाद में नोर्डिक आर्यो की एक शाखा आकर बस गई जो ईरानी आर्य कहलाये। ये ईरानी आर्य लगभग **1500 ई. पू. यहाँ आकर बस गये।** यूरोपीय विद्वान् आर्यों का मूल स्थान मध्य एशिया मानते है। उनके अनुसार इन आर्यों की एक शाखा ईरान पहुँची एवं दूसरी शाखा भारत पहुँची। आर्यो का मूल स्थान मध्य एशिया मानने वालों में मैक्समूलर, सेयस, रिचार्ड टेम्पल एवं जॉर्ल कार्पेन्टियर आदि विद्वानों के नाम मुख्यत: लिये जा सकते है।

ब्रेन्डेस्टीन महोदय का मानना है कि आर्यो का मूल निवास स्थान यूरोप के दक्षिण स्थित **किर्गीज नामक घास का मैदान** था। यहीं से इण्डो-ईरानी आर्य पृथक् होकर भारत एवं ईरान की ओर चले गये। ब्रेन्डेस्टीन महोदय का यह अभिमत प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं भाषा शास्त्र के साक्ष्य से मेल खाता है। डॉ. सुनीत कुमार चटर्जी आदि विद्वान् उनके इस मत को सही मानते है।

डॉ. राजबली पाण्डेय, सम्पूर्णानन्द एवं अविनाशचन्द्र दास आदि भारतीय विद्वान् आर्यो का मूल निवास स्थान भारत ही मानते है। यहीं से आर्यों की कुछ शाखाएँ उत्तर-पश्चिम की ओर प्रस्थान कर ईरान में जाकर बस गयीं। ईरान में **जरथुस्त्र** ने जरथुस्त्र धर्म का विकास किया। उनके सर्वप्रमुख धर्म ग्रन्थ **अवेस्ता** जो जेंद अर्थात् पुरानी ईरानी भाषा में है, उसकी बहुत-सी बातें भारतीय आर्यो के ग्रन्थ वेदों से बहुत-कुछ साम्य रखती हैं।

---

1 रामेश्वर गुप्ता, **मानव की कहानी, पूर्वोक्त,** पृ. 141.

ईरानी इतिहास जानने के साधन (Sources of Iranian History)

ईरानी धर्म ग्रन्थ अवेस्ता प्राचीन ईरानी इतिहास जानने का सर्व प्रमुख स्रोत है। भारतीय इतिहास में जो स्थान वेदों का है, ईरानी इतिहास में स्थान अवेस्ता का है। अरबी लेखक **तबरी** एवं **मसूदी** के अनुसार अवेस्ता 12,000 पशुओं (गायों) की खालों पर लिखी हुई थी। एक पहलवी अनुश्रुति के अनुसार इसमें 1,200 अध्याय थे।[1] यह अवेस्ता अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। सर्वप्रथम 1000 ई. पू. जरथुस्त्र ने इसमें परिवर्तन किये थे। कहा जाता है कि इसकी दो प्रतियाँ राजा विस्तास्प द्वारा तैयार करायी गयी थीं। एक प्रति तो उस समय नष्ट हो गयी जबकि सिकन्दर ने पर्सिपोलिश के महल को जलाकर फूँक दिया था एवं दूसरी प्रति यूनानी आक्रमणकारी उठाकर ले गये थे। ईसा की तीसरी शताब्दी में पर्शियायी राजा वोलोजेसस ने इसके सभी बचे हुए अंशों को एकत्रित कराया, यही संग्रह चौथी शताब्दी तक जरथुस्त्र धर्म का आधिकारिक ग्रन्थ अवेस्ता बन गया।[2]

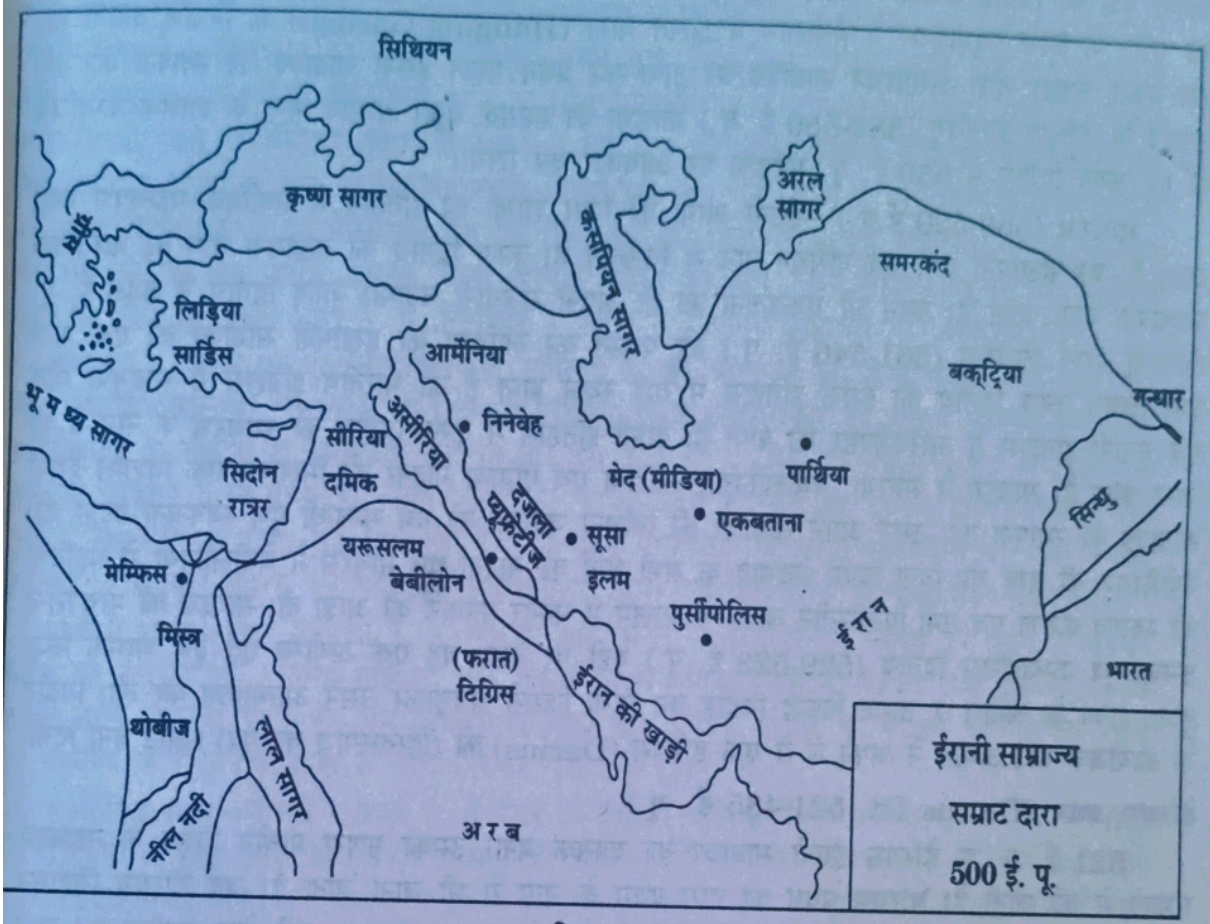

चित्र 1

अवेस्ता के अलावा हेरोडोटस की 'हिस्ट्री' से एवं अन्य यूनानी लेखकों के वर्णनों से भी ईरानी इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। हखामनी सम्राटों के अभिलेखों से ईरानी इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

ईरान का राजनीतिक इतिहास
(POLITICAL HISTORY OF IRAN)

अवेस्ता, हेरोडोटस के इतिहास एवं हखामनी अभिलेखों से पता चलता है कि वैदिक आर्यों की तरह ईरानी आर्य भी कई शाखाओं में बँट गये थे। इनमें मीडिया के मीडियन, फारस के पर्सियन, पर्थिया के पार्थव, बल्ख के वैक्ट्रीयन, कसाइट एवं मितन्नियों का मुख्यतः उल्लेख किया जा सकता है।

मीडियन साम्राज्य (Median Empire)—मीडिया के उत्कर्ष के साथ ही ईरान का ऐतिहासिक युग प्रारम्भ माना जाता है। ईरान के उत्तर पश्चिम में मीडिया स्थित था। मीडिया चूँकि असीरिया के निकट था।

---

1. श्री राम गोयल, **विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ, पूर्वोक्त,** पृ. 387.
2. विल डूरेन्ट, **सभ्यता की कहानी, पश्चिमेशिया खण्ड, पूर्वोक्त,** पृ. 328.

अत: उसे बार-बार असीरियन आक्रमणों का सामना करना पड़ता था। मीडिया वालों ने डियोकीज को अपना राजा चुना। डियोकीज ने **एकबताना** को मीडियन साम्राज्य की राजधानी बनाया एवं असीरियन शक्ति का कुशलतापूर्वक सामना किया। डियोकीज एवं उसके उत्तराधिकारी के पश्चात् मीडिया पर सीथियनों ने अधिकार कर लिया। मीडिया को सीथियनों से मुक्ति दिलाने का श्रेय उवक्षत्र को जाता है उसने समस्त पश्चिमी ईरान को संगठित किया। निनिवेह के विरुद्ध उवक्षत्र ने कैल्डियन नरेश नेबोपोलस्सर (625-604 ई. पू.) के साथ सन्धि की और 612 ई. पू. असीरियन साम्राज्य को सदैव के लिये समाप्त कर दिया। 590 ई. पू. में उवक्षत्र ने लीडिया पर आक्रमण कर 5 वर्ष तक घोर युद्ध किया। 5 मई, 583 ई. पू. सूर्य ग्रहण के दिन नये बेबीलोनियन सम्राट नेवुशड्रेजर (605- 563 ई. पू.) की मध्यस्थता से दोनों पक्षों के बीच सन्धि सम्पन्न हुई। लीडियन राजकुमारी का विवाह मीडियन राजकुमार इश्तुवेगु (अस्त्यागीज) के साथ कर दिया गया। उवक्षत्र ने अपनी पुत्री का विवाह बेबीलोन सम्राट नेवुशड्रेजर के साथ सम्पन्न किया। इसी मीडियन राजकुमारी (उवक्षत्र की पुत्री) के लिये नेवुशड्रेजर ने बेबीलोन में झूलते बागों (Hanging Garden) का निर्माण कराया था। इस प्रकार उवक्षत्र द्वारा असीरियन साम्राज्य का अन्त कर प्रथम महान ईरानी साम्राज्य की स्थापना की गई। उवक्षत्र के पश्चात् इश्तुवेगु (584-550 ई. पू.) मीडिया का शासक बना। अन्सान प्रान्त के शासक कम्बुजिय के पुत्र कुरुष द्वितीय ने 550 ई. पू. मीडिया पर अधिकार कर लिया।

सायरस (550-529 ई.पू.)—ईरानी आर्यों की जिस शाखा को इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, वह हखामनी वंश एवं पर्सियन नाम से विख्यात है। कुरुष द्वितीय को हखामनी वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उसने भी एकबताना को ही अपनी राजधानी बनाया। कुरुष द्वितीय ने 546 ई. पू. लीडिया नरेश क्रोयसस (561-546 ई. पू.) को परास्त कर लीडिया को हखामनी साम्राज्य का एक प्रान्त बना लिया। कुरुष द्वितीय को ईरानी इतिहास में वही स्थान प्राप्त है जो भारतीय इतिहास में चन्द्रगुप्त मौर्य एवं यूनानी इतिहास में अलैक्जैण्डर को प्राप्त है। ईरानी इतिहास में कुरुष द्वितीय को **सायरस** के नाम से भी जाना जाता है। सायरस ने सीरिया, बेबीलोनिया, लीडिया एवं एशिया माइनर को मिलाकर एक विशाल ईरानी साम्राज्य की स्थापना की। उसने अपने साम्राज्य की विभिन्न जातियों को धर्म सम्बन्धी पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की। नेपोलियन की तरह वह बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मों को मानता था। सायरस ने बेबीलोनिया से यहूदियों को स्वतन्त्र कराया एवं उन्हें फिलीस्तीन जाकर येरुशलम में मन्दिर बनवाने की आज्ञा दी। सायरस की मृत्युपरान्त उसका पुत्र कम्बाइसिस द्वितीय (529-523 ई. पू.) गद्दी पर बैठा। वह एक अयोग्य एवं क्रूर शासक सिद्ध हुआ। राज्य के अमीरों ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिससे घबड़ाकर उसने आत्महत्या कर ली। विद्रोह के आयोजक सात अमीरों ने अपने में से एक डेरियस (Darius) को (हिस्तास्पीज का पुत्र) सम्राट बना दिया।

डेरियस प्रथम (Darius Ist, 521-485 ई. पू.)

521 ई. पू. में डेरियस ईरानी साम्राज्य का शासक बना। उसकी गणना प्राचीन विश्व के महानतम सम्राटों में की जाती है। डेरियस प्रथम को दारा प्रथम के नाम से भी जाना जाता है। जब डेरियस सिंहासन पर बैठा, उसी समय उसके साम्राज्य के कई प्रान्तों में विद्रोह हुआ। उसने एक बड़ी सेना संगठित कर सभी विद्रोहों का कुशलतापूर्वक दमन किया। अकेले बेबीलोनिया में ही 3,000 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। इसीलिये इसे **लौह पुरुष** भी कहा जाता है। 512 ई. पू. दारा ने थ्रेस एवं मेसीडोन पर विजय प्राप्त की। 510 ई. पू. उसने भारत के सिन्ध व पंजाब प्रान्तों को अपने अधीन कर लिया। अब उसका साम्राज्य रोमन साम्राज्य की तरह ही **तीन महाद्वीपों— एशिया, अफ्रीका एवं यूरोप तक विस्तृत हो गया। डेरियस प्रथम का साम्राज्य भारत में सिन्ध नदी के किनारे तक, सम्पूर्ण मध्य एशिया, ईरान, फिलीस्तीन असीरिया, मिस्र, एशिया माइनर एवं यूरोप में यूनान के पूर्वी भागों तक विस्तृत हो गया।**

डेरियस की ख्याति एक विजेता से कहीं अधिक एक कुशल प्रशासक के रूप में थी। उसने अपने साम्राज्य को 20 प्रान्तों में बाँटकर वहाँ गवर्नर नियुक्त किये। गवर्नरों के कार्य की देख-रेख के लिये गुप्तचर नियुक्त किये। सड़क एवं यातायात के साधनों का अत्यधिक विकास किया गया। इससे सम्पूर्ण राज्य में शांति व्यवस्था कायम रखने में आसानी हुई। यातायात के साधनों के विकास ने ईरानी व्यापार में भी अत्यधिक उन्नति की। ईरान की मध्यस्थता से यूरोप एवं भारत आदि पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक सम्पर्क स्थापित हुआ।